पिछले साल के कामयाब मोर्चे के बाद हम फिर एक बार, बड़ी उम्मीदों के साथ, मुंबई में क्वियर आज़ादी मार्च के लिये इकट्ठा हुए हैं. हाल ही में, २ जुलाई को दिल्ली हाई कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फ़ैसला सुनाया: आइ पी सी की धारा ३७७ के तहत बालिगों के बीच सहमति से होने वाले समलैंगिक रिश्तों को अपराध ठहराया जाता था. अंग्रेज़ों के ज़माने से चले आ रहे इस दकियानूसी कानून के इस हिस्से को कोर्ट ने खारिज़ कर हमारी सबसे बुनियादी माँग पूरी कर दी. यह हमारे लिये एक बहुत बड़ी उपलब्धि है. तो फिर क्वियर आज़ादी का नारा क्यों?

क्योंकि इस फ़ैसले के बावजूद देश के अनगिनत क्वियर नागरिक आज भी आज़ाद नहीं हैं. हम क्वियर लोग कौन हैं? वैसे तो 'क्वियर' का मतलब है 'अजीब', और इसका इस्तेमाल हम जैसे लोगों को नीचा दिखाने के लिये किया जाता था. पर फिर इसी शब्द को नये मायने देते हुए इसे एक पहचान के रूप में अपना लिया गया, और अब हम गर्व से कहते हैं कि हम क्वियर हैं. क्वियर, यानि हम सब 'एल जी बी टी आई' यानी लेस्बियन, गे, बाइसेक्शुअल, ट्रांस्जेन्डर, इन्टर्सेक्स लोग, या हिजड़ा, कोथी, पंथी – इन, और इन जैसे शब्दों द्वारा परिभाषित सभी व्यक्ति, जो इस विषमलैंगिक्ता-प्रधान (यानि स्त्री-पुरुष रिश्ते को ही मान्यता देने वाले) और दो ही लिंगों में बंटे समाज में अपने आप को अमान्य या अदृश्य पाते हैं.

आज भी समाज में हमारे प्रति भेद-भाव कायम है. अब भी बहुत लोग हमें नफ़रत और डर की निगाह से देखते हैं. ऊपर से दिल्ली हाई कोर्ट के बड़े ही सुलझे हुए फ़ैसले के ख़िलाफ़ सारे धार्मिक कट्टरवादी उठ खड़े हुए हैं और उसे चुनौती देते हुए वही घिसी-पिटी और गलत बातें दोहरा रहे हैं – कि "यह सब" हमारी संस्कृति का हिस्सा नहीं है, यह "बीमारी" है, वगैरह. हम हमेशा से इसी समाज का हिस्सा रहे हैं, और बाकी नागरिकों की तरह हम भी समाज में अपने लिये जगह और स्वीकृति चाहते हैं. हमें भी इस समाज में समानता और इज़्ज़त से जीने का पूरा हक़ है. और चूंकि १५ अगस्त को देश आज़ाद हुआ था, हम इसी दिन के बाद अपनी आज़ादी का नारा लेकर मुंबई की सड़कों पर निकले हैं.

हम सरकार और समाज के सामने अपनी कुछ माँगें रखना चाहते हैं:

*धारा ३७७ के बारे में अब सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होगी, अतः इस कानून को बदलने की हमारी माँग बनी हुई है.

*हम चाहते हैं कि जिन्सियत/लैंगिक्ता और जेन्डर के आधार पर किये जाने वाले भेद-भाव के ख़िलाफ़ संविधान में प्रावधान लाये जायें.

*हममें से जो ट्रांस्जेन्डर लोग हैं, जो दो लिंगों में बंटे इस समाज में अपने लिये जगह नहीं पाते हैं, उनकी कानूनी पहचान हो, और उन्हें भी वो सारे नागरिक-अधिकार मिलें जो किसी स्त्री या पुरुष को प्राप्त हैं.

*हमारी यह माँग है कि स्वास्थ्य-प्रणाली हमारे अस्तित्व और ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील बने, ताकि हम जैसे लोगों को बीमार या विकृत समझकर हमारा 'इलाज' करने की असंगत और क्रूर कोशिशें बंद हों.

*हमारे समाज में शादी अनिवार्य मानी जाती है और हर व्यक्ति पर शादी का दबाव डाला जाता है, जिससे कितनी ही ज़िन्दगियाँ बरबाद होती हैं. यूं ज़बर्दस्ती की गयी शादियों के ख़िलाफ़ हम मुहिम छेड़ रहे हैं.

*क्वियर लोगों के प्रति परिवारों द्वारा, शैक्षणिक संस्थानों में, काम की जगहों में और सार्वजनिक स्थलों में होने वाली नफ़रत और हिंसा से हम आज़ादी चाहते हैं. खास करके कट्टरवादी व दकियानूसी ताकतें हमारे बारे में घिनौनी बातें करना और समाज में ज़हर फैलाना बंद करें.

आज का जुलूस सिर्फ़ क्वियर समुदायों के लिये नहीं है. और भी बहुत से साथी हमारे हौसले बुलंद करने यहाँ आये हैं - सगे-संबंधी, दोस्त, स्वयंसेवी संस्थाएँ, नारीवादी संगठन, कॉलेज में पढने वाले छात्र. क्यों न आप भी हमारे साथ कुछ वक़्त बिताएँ, कुछ दूर साथ चलें, हमारी आवाज़ में अपनी आवाज़ मिलाएँ?

- क्वियर आज़ादी मुंबई